फिल्म जगत में हिंदी का योगदान

डॉ. अल्ताफ पाषा. डी.एम
सह - प्राध्यापक, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महारानी लक्ष्मी अम्माण्णी महिला विद्यालय स्वायत्त, मल्लेश्वरम,
बेंगलुरु-५६००१२.
संपर्क – ९९८०९६२३०४
ई-मेल – althaf1606 @gmail.com.

फिल्म, आधुनिक समाज के दैनिक उपयोग और विलास की वस्तु है। हमारे सामाजिक जीवन में फिल्म ने इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है कि, उसके बिना सामाजिक जो जीवन है वह अधूरा - अधूरा सा लगता है। फिल्म देखना लोगों के जीवन की दैनिक क्रिया की तरह हो गयी है। जैसे शाम को लोगों ने घर के सामने एकत्रित होकर सीरियल, धार्मिक नाटक, फिल्में एक साथ देखते हैं। उससे फिल्म की उपयोगिता का अनुमान लगाया जा सकता है। मनोरंजन फिल्म का मुख्य प्रयोजन रहा है। दूसरा मनोरंजन के अतिरिक्त भी जीवन में फिल्म का बहुत महत्व है और इसके बहुत से लाभ भी है।

19वीं शताब्दी में 'अमेरिका के थॉमस अल्वा एडिसन' ने फिल्म का आविष्कार किया था। इन्होंने सन 1890 में फिल्म को हमारे सामने प्रस्तुत किया था। पहले सिनेमा लंदन में 'कुमार नामक' वैज्ञानिक के द्वारा दिखाया गया था। भारत में 1913 में 'दादा साहेब फाल्के' के द्वारा सिनेमा बनाया गया, जिसकी बहुत प्रशंसा हुई। फिर इसके बाद तो बहुत सारे फिल्म बनते चले गए। लेकिन सबसे जरूरी बात इसमें यह रही कि भारत का स्थान फिल्म के महत्व की दिशा में फिल्म को लगभग 130 वर्ष हो गए हैं इस पूरे शतकीय दौर में न जाने कितने विषय आए और कितने विषय गए किन्तु माध्यम का भाषायी ताना बाना हिन्दी भाषा के इर्द गिर्द बुना रहा है।

सिनेमा, जिसे मोशन पिक्चर या फिल्म के रूप में जाना जाता है, आज मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन है। आज सिनेमा हम भारतीयों के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। बिना रंग वाले सिनेमा से लेकर कलरफुल सिनेमा तक; मूक फिल्मों से डॉल्बी साउंड तक, रीलों से एकल शोरील तक; जीरो ग्राफिक्स से लेकर एनिमेशन व वी एफ एक्स तक भारतीय सिनेमा का सफर काफी अनूठा रहा है। सिनेमा, सेल्युलाइड पर लिखे जाने वाली साहित्य की आधुनिक विधा माना जाता है जिसमें साहित्य, चित्र, नृत्य और संगीत जैसी सभी विधाएँ आकर समाहित हो जाती हैं।

भारतीय सिनेमा का विकास एकाएक नहीं हुआ है। भारतीय फिल्म उद्योग दादा साहेब द्वारा बनायी गई पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' के बाद से एक लंबा सफर तय कर चुका है। दादा साहेब फाल्के को "भारतीय सिनेमा का जनक" भी माना जाता है। हालांकि यह एक मूक फिल्म थी, लेकिन उन्हें क्या पता था कि वह एक ऐसी कला को जन्म दे रहे हैं जिसकी आवाज दुनिया भर में गूंजेगी। उनकी पहल ने हमारे देश में कई फिल्म निर्माताओं के उदय को प्रेरित किया। वहीं, ध्वनि के साथ पहली मोशन पिक्चर यानी अर्देशिर ईरानी द्वारा निर्देशित 'आलमआरा' जो 14 मार्च 1931 को रिलीज़ हुई थी। फिल्म ने अपने गानों और बेहतरीन संवादों के जरिए खूब वाह-वाही लूटी। मनोरंजन के इस नए माध्यम लोगों की बढ़ती दिलचस्पी को देखते हुए देश के लगभग सभी नगरों में सिनेमाघर स्थापित किए गए, इससे फिल्म निर्माण को गति मिली।

आज हिन्दी भाषा विश्व की चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है, विश्व की दस प्रमुख भाषाओं में अधिक जनसंख्या के द्वारा बोली जाने वाली भाषा के अनुसार चीन की मंदारिन प्रथम, स्पेन की स्पेनिश द्वितीय, ब्रिटेन की अंग्रेजी तृतीय तथा भारत की

हिन्दी चतुर्थ स्थान पर है हालांकि क्रमश: पांचवें एवं दसवें स्थान पर भी भारतीय भाषा बंगाली एवं मराठी ही है जिन्होने हिन्दी भाषा के प्रसार पर खूब मदद की है । आज संचार माध्यम, सोशल मीडिया, टेलीविज़न के धारावाहिक, मोबाइल के वेब धारावाहिक आदि के तीव्र विकास ने इस प्रसार को और अत्यधिक गति दे दी है । हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल कहते हैं कि 'भूमंडलीकरण भारतीय जीवन को गहरे में जाकर प्रभावित किया है लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि हिंदी खत्म हो जाएगी और अंग्रेजी उसका स्थान ग्रहण कर लेगी।' भारत की 54 फीसदी आबादी 25 साल से कम उम्र के नौजवानों की है और भूमंडलीकरण ने उसकी आकांक्षाएं और चिंताएं बदली हैं। सूचना और आबादी दुनिया की नागरिकता के धरातल पर किसी कस्बे या महानगर के युवा में ज्यादा फर्क नहीं है। दोनों एक वर्चुअल वर्ल्ड में जी रहे हैं और रियल टाइम में चैट कर रहे हैं । इसका जीता जागता उदाहरण है टी वी में दिखाये जाने वाले विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक धारावाहिक, रियालिटि शो जैसे नृत्य अथवा गायन में समान रूप पूरे भारत के कोने कोने से प्रतिभागियों का अपनी काला कौशल का प्रदर्शन, अमेरिका के बांद दूसरे नंबर भारत आता है।

यह संभवत: हिन्दी भाषा के प्रसार का स्वर्णकाल कहा जाएगा जब मनोरंजन के माध्यम से भाषा नें अपनी जड़ें वैश्विक रूप में जमाई है इसमें हिन्दी फिल्मों का योगदान सर्वोपरि माना जाएगा। विश्व हिंदी सम्मेलन के तहत 'हिन्दी के प्रचार प्रसार में हिन्दी फिल्मों की भूमिका' हिन्दी के प्रचार- प्रसार में फिल्मों ने साहित्य अकादमियों और नेशनल बुक ट्रस्ट से ज्यादा योगदान दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सिनेमा, मीडिया और हिन्दी का नाता बहुत पुराना है। जैसे हिन्दी हिन्दुस्तान की जान है, वैसे ही हिन्दुस्तान में हिन्दी के बगैर सिनेमा और मीडिया की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा और मीडिया का योगदान बहुत ही अतुल्य रहा है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में सिनेमा और मीडिया ने हिन्दी को जीवनदान दिया है। आज आप भारत के किसी भी कोनें में पहुँच जाएँ वे हिन्दी इसलिए समझ पाते हैं कि उन्होने उसे फिल्मों अथवा अन्य मनोरंजन के माध्यम से देखा व सुना है । आज विदेशियों को यदि अपना प्रचार करना होता है, चाहे वह सिनेमा का हो चाहे उनके उद्योग का हो, उन्हें हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ता है, क्योंकि अधिकतर लोग सहज, सरल व सुबोध हिन्दी भाषा को जानते, समझते और बोलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत से बाहर हिंदी फिल्मों को देखने के प्रति भारतवंशी ही लालायित नहीं रहते वरन अन्य भाषा-भाषी भी इनके गीतों को गुनगुनाते नजर आते हैं। इनको लेकर पूर्व सोवियत संघ अब रूस से लेकर खाड़ी के देशों, अफ्रीका से लेकर दक्षिण-पूर्व एशियाई समेत तमाम अन्य देशों में अभूतपूर्व दिलचस्पी है।

हिंदी फिल्म का यह 130 सालों का इतिहास हम से बहुत कुछ कहता है । यह सिर्फ हिंदी सिनेमा का इतिहास नहीं अपितु भारतीय समाज के आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक नीतियों, मूल्यों और संवेदनाओं का ऐसा इंद्रधनुष है जिसमें भारतीय समाज की विविधता उसकी सामाजिक चेतना के साथ सामने आती है। भारतीय समाज का प्रत्येक विविध रंग यहाँ मौजूद हैं । प्राचीनकाल में पठन-पाठन, मुद्रण के साधन के अभाव में जनसंचार के माध्यम गुरु या पूर्वज हुआ करते थे, जो मौखिक रूप से सूचनाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाते थे। लेखन के प्रचलन के बाद भोज पत्रों, ताम्र पत्रों, वस्त्रों आदि पर संदेश लिखे जाते थे। गुप्तकाल में शिलालेखों द्वारा धार्मिक एवं राजनीतिक सूचनाएं जन सामान्य तक पहुंचायी जाती थीं, अब जमाना बदल गया है की प्रत्येक के हांथ में मोबाइल जैसा सूचना यंत्र है और एक क्लिक पर सूचनाओं का अंबार लगता है। फिल्मों के वर्तमान परिदृश्य का जनक फ्रांस को माना जाता है फ्रांस ने विश्व को सिनेमा का आरंभ दिया है ।

भाषा स्थानांतरण दुनिया के उत्कृष्ट कार्यक्रमों को हिंदी के माध्यम से रातों-रात करोड़ों नए दर्शक दे रहा है। यह स्वतंत्र बाज़ार और प्रतिस्पर्धा का आज का स्वीकृत खेल है। एक बात अवश्य है कि एक ओर हिंदी भाषा बाज़ार और मुनाफ़े की कुंजी बन रही है वहीं दूसरी ओर मिलीजुली हिन्दी जिसे 'हिंगलिश' कहना ज्यादा उचित होगा। हिंदी भाषा का तद्भवीकरण एक सहज प्रवाह है और सजग तत्समीकरण इस प्रवाह के प्रभाव को नियंत्रित, नियमित, व्यवस्थित करने की एक समानांतर चेष्ठा, दोनों ही आवश्यक हैं। रूसी विद्वान डॉ पीटर बारानिको मानते हैं कि 'हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी सिनेमा ने जितना योगदान दिया है उतना और किसी माध्यम ने नहीं दिया है'।

आज हालीवुड के फिल्म निर्माता भी भारत में अपनी विपणन नीति बदल चुके हैं। वे जानते हैं कि यदि उनकी फिल्में हिंदी में रूपांतरित की जाएगी तो यहाँ से वे अपनी मूल अँग्रेज़ी में निर्मित चित्रों के प्रदर्शन से कहीं अधिक मुनाफ़ा कमा सकेंगे। हालीवुड

की आज की वैश्विक बाज़ार की परिभाषा में हिंदी जानने वालों का महत्व सहसा बढ़ गया है। भारत को आकर्षित करने का उनका अर्थ अब उनकी दृष्टि में हिंदी भाषियों को भी उतना ही महत्व देना हैं। परन्तु आज बाज़ार की भाषा ने हिंदी को अंग्रेज़ी की अनुचरी नहीं सहचरी बना दिया है।

आज टी.वी. देखने वालों की कुल अनुमानित संख्या जो लगभग 10 करोड़ मानी गई है उसमें हिंदी का ही वर्चस्व है। आज हम स्पष्ट देख रहे हैं कि आर्थिक सुधारों व उदारीकरण के दौर में निजी पहल का जो चमत्कार हमारे सामने आया है इससे हम मानें या न मानें हिंदी भारतीय सिनेमा के माध्यम से दुनिया भर के दूरदराज़ के एक बड़े भू-भाग में समझी जाने वाली भाषा स्वतः बन गई है। मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी भाषा द्वारा रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। हिंदी आज विश्व की चतुर्थ सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत के मनोरंजन के क्षेत्र में चाहे वह फिल्म हो या टीवी हिंदी पूरी तरह छाई हुई है।

हिंदी फिल्में तो वर्षों से भारत में ही नहीं पूरे विश्व में लोकप्रिय रही हैं। भारत फिल्म बनाने के मामले में पूरे विश्व में सबस पहला स्थान रखता है और उसमें अधिकतर फिल्में हिंदी में ही होती हैं। हिंदी भाषा के अभिनेता, अभिनेत्री, गायक, संगीतकार, गीतकार, संपादक, पटकथा लेखक आदि की हिंदी फिल्म उद्योग में निरंतर मांग बनी रहती है। मुंबई स्थित हिंदी फिल्म जगत ऐसे लोगों को हमेशा रोजगार देता रहा है।

सैटेलाइट टी वी के आगमन से टीवी जगत में एक क्रांति आ गई है, और सैकड़ो टी वी चैनल अस्तित्व में आ गये हैं। टी वी जगत में हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार की अपार संभावनाएं बनी हुई हैं। ऐसे अनेकों हिंदी समाचार चैनल इस समय टी वी पर प्रसारित हो रहे हैं, जिनमें एंकर, पत्रकार, संवाददाता आदि की मांग हमेशा रहती है। इसके अलावा मनोरंजन के चैनल है, जिनमें अनेक हिंदी सीरियल प्रसारित होते रहते हैं। इन सीरियल में काम करने वाले कलाकारों की मांग निरंतर बनी रहती है। इस तरह टी वी भी रोजगार देने का एक बहुत बड़ा प्लेटफार्म बन गया है।

मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी की जैसी लोकप्रियता बढ़ती है, उसी के अनुसार हिंदी भाषा के समाचार पत्र-पत्रिका आदि भी बढ़ने लगे हैं और इन पत्रों के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने हेतु हिंदी में दक्ष व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।

निष्कर्ष:

आज के युवा वर्ग की मांग यह है कि वह दर्शकों को अपने देश की सभ्यता, संस्कृति और गौरवपूर्ण परंपरा का दर्शन सिनेमा के माध्यम से कराएं। अच्छे चित्रों का निर्माण करके उनमें भारतीय संस्कृति, सामाजिकता और नैतिक परंपराएं को दिखाई जाए। जिससे दर्शकों के मन में अच्छे भावनाएं समाज और देश के प्रति आएंगे। जो फिल्म सेंसर बोर्ड है, उसको अपना कठोर रुख अपनाना चाहिए, जिससे की अश्लील, कामुकता और विलास से भरी जो भी फिल्में है वह संपूर्ण जनमानस में अश्लीलता, कामुकता और विलास की भावना को बढ़ावा ना दें और इसके साथ ही सही शब्दों में सिनेमा एक वरदान के रूप में सिद्ध हो।

सहायक ग्रंथ सूची :

१. फिल्म जगत का पितामह - दादा साहब फाल्के
२. इश्क एक रंग अनेक - विनोद विप्लव
३. हिन्दी सिनेमा का इतिहास - संजय श्रीवास्तव